thearyasamaj.org

र.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 7 रोहतक, 14 जुलाई, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

हमें मिल गया एक कुशल प्रशासक

❑ खुशहालचन्द्र आर्य

मैं अपने देश का बड़ा सौभाग्य समझता हूँ कि जिसको नरेन्द्र मोदी जैसा त्यागी, तपस्वी, नि:स्वार्थी, दृढ़निश्चयी, स्वाभिमानी, अदम्य साहसी, राष्ट्रभक्त, चरित्रवान्, कर्मठ कार्यकर्त्ता व कुशल प्रशासक प्रधानमंत्री के रूप में मिल गया जिसके हृदय में राष्ट्र की सेवा के भाव कूट-कूटकर भरे हैं। मोदी जी ने पहले बचपन में चाय बेची, फिर R.S.S. का स्वयंसेवक बना, फिर R.S.S. का प्रचारक बना और फिर B.J.P. का कार्यकर्त्ता बनकर, गुजरात का मुख्यमन्त्री बना और आज ईश्वर की कृपा से भारत के प्रधानमंत्री के पद को सुशोभित कर रहे हैं। मोदी जी सीढ़ी पर सीढ़ी चढ़े हैं, इसलिए इन्होंने अपने जीवन में सभी दु:ख-सुख, गरीबी-अमीरी, खट्टे-मीठे व अच्छे-बुरे दिन देखे हैं जिससे इनका अनुभव बहुत गहन व प्रगाढ़ बन गया है। इनका जीवन दर्शन यह बतलाता है कि इनके जीवन में ऊपर लिखे तो सभी गुण है ही, साथ परिश्रम और परोपकार भी जीवन में भरा पड़ा है। इनको अपने खानपान व चरित्र का भी पूरा ध्यान रहता है।

ये देश का हित चाहने वाले को ही देश का सच्चा नागरिक मानते हैं। देश से जो द्रोह करता है, देश के हित को अपना हित नहीं समझता, चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो, सिक्ख हो या कोई अन्य सम्प्रदाय को मानने वाला हो, मोदी जी उन सबका खास विरोधी है। उनको इस देश में रहने का कोई अधिकार नहीं, ऐसा मानते हैं। इसीलिए देशद्रोही लोग मोदी जी से बहुत भय खाते हैं। ये देशहितैषी के मित्र हैं और देशद्रोही के शत्रु हैं।

मोदी जी में सबसे बड़ा गुण यह है कि जिस काम को इन्होंने अच्छा समझ लिया उसको करने में चाहे कितनी भी बड़ी आपत्ति आने पर भी करके ही रहते हैं और जो काम देश

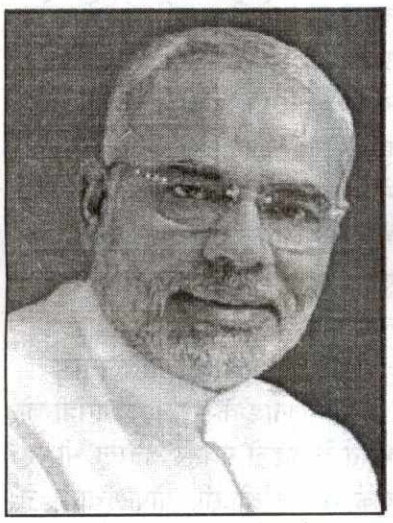

के अहित में है उसको न तो स्वयं करेंगे और न ही दूसरों को करने देंगे। ये चाहते हैं कि प्रत्येक भारतीय अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य को समझे और उसका पालन करे, चाहे वह किसान हो, व्यापारी हो, नौकरी पेशा करने वाला हो, सरकारी ऑफिसर या बड़ा अधिकारी हो, मन्त्री हो या अन्य कोई सेवा करने वाला हो, तभी देश का विकास होगा और देश शक्तिशाली होकर अपने देश के स्वाभिमान को बचा सकेगा। मोदी जी का कहना है कि पहले आप स्वयं मजबूत बनो और फिर दूसरों का सहयोग करो और दोस्ती का हाथ बढ़ाओ। मजबूत के ही सब मित्र बनते हैं, कमजोर का कोई मित्र नहीं बनता। मोदी जी **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के पक्षधर हैं। ये कहते हैं कि पूरा विश्व एक परिवार है, हमें सब ईर्ष्या व द्वेष भुलाकर, मिल-जुलकर, प्रेमपूर्वक भाईचारे का व्यवहार करते हुए रहना चाहिए। मोदी जी का सिद्धान्त है कि पहले पहले छेड़ो मत, फिर छोड़ो मत। ईश्वर की अपार कृपा से इन सभी गुणों से विभूषित, सच्चे देशभक्त, ईमानदार व अत्यन्त परिश्रमी के हाथों में देश की बागडोर आ गई है। इन से हम कुछ अपेक्षाएं रखते हैं, जो इसी भांति हैं, जिनको इन्होंने अपने चुनाव अभियान में करने की भी कही थी।

(1) भ्रष्टाचार से मुक्त करवाना— कांग्रेस सरकार के समय देश में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया था। देश की नस-नस में भ्रष्टाचार फैल चुका था। एम.एल.ए., सांसद, मंत्री व सभी अफसर लोग भ्रष्टाचार में लिप्त थे। भ्रष्टाचार से महंगाई भी आसमान छू रही थी जिससे पूरी जनता तंग आई हुई थी। मोदी जी का सबसे पहला काम भ्रष्टाचार के कारण, रिश्वतखोरी, अधिक मुनाफा, अनुशासनहीनता, कर्त्तव्य के प्रति लापरवाही आदि हैं, उनके ऊपर ध्यान देना।

(2) देश के स्वाभिमान की रक्षा करना— इसके लिए मोदी जी को देश शक्तिशाली बनाना पड़ेगा, देश का चहुंमुखी विकास करके विश्व के सामने देश को एक अद्भुत शक्ति के रूप में खड़ा करना पड़ेगा, जिसके लिए मोदी जी सचेष्ट हैं।

(3) महंगाई को काबू में करना— इस समय देश में जो सबसे बड़ी समस्या है, वह महंगाई है। इससे सारी जनता तंग आई हुई है। मोदी जी को देश से भ्रष्टाचार समाप्त करना होगा, सरकारी खर्चे कम करने होंगे, रिश्वतखोरी बन्द करनी होगी, सिंचाई के साधन बढ़ाने होंगे, जमाखोरी बन्द करनी होगी, नागरिकों में राष्ट्रीय भाव जागृत करना होगा तब कहीं महंगाई रुक सकती है।

(4) बाहर का काला धन देश में लाना— यह मांग बाबा रामदेव ने कई वर्षों से उठा रखी है, परन्तु कांग्रेस के ही बहुत से नेताओं का काला धन विदेशों में जमा है। विशेषकर स्विटजरलैण्ड में। जिनके हाथों में काला धन लाने की जिम्मेदारी है उन्हीं का काला धन विदेशों में जमा हो तो कैसे काला धन बाहर से आयेगा। अत: भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार है, मोदी जी जैसा कठोर और ईमानदार व्यक्ति प्रधानमंत्री हैं। अब आशा है कि काला धन जरूर-जरूर ही आ जायेगा। काला धन आने से बहुत-सी समस्यायें स्वयं ही समाप्त हो जायेंगी और देश समृद्धिशाली बन जायेगा।

(5) मजदूर और किसानों की स्थिति में सुधार— देश में किसानों और मजदूरों की स्थिति बड़ी सोचनीय है। इनकी समस्या हल किये बगैर देश उन्नति कभी नहीं कर सकता। यह दोनों समुदाय देश की नींव हैं। इनका सुधार हुए बिना देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। इसलिए इनकी तरफ विशेष ध्यान देना होगा।

(6) व्यापारियों को सहयोग देने की आवश्यकता— किसी भी देश की उन्नति व सम्पन्नता के लिए देश में कल, कारखाने, मीलें और व्यापार ऊँचे स्तर पर होना जरूरी है। इसके लिए सरकार को व्यापार में रियायतें व छूट अधिक देनी पड़ेगी जिससे व्यापारी अपना व्यापार और अधिक बढ़ा सकें। मोदी जी के गुजरात में मुख्यमन्त्री के समय व्यापारी वर्ग उनसे बहुत खुश था, इसलिए मोदी जी के पास व्यापारियों को प्रसन्न रखने की कला है। इसलिये अब उनके राज्य में देशभर के व्यापारी बड़े खुश रहेंगे। ऐसी सभी को आशा है।

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

हिन्दी-विरोध की राजनीति राष्ट्रहित में नहीं

❑ महावीर 'धीर', 21/1227, प्रेमनगर, रोहतक 9466565162

जब-जब हिन्दी विकास की बात उठती है तब तब तमिलनाडू द्वारा उसका विरोध किया जाता है। म०ज० रामचन्द्रन को मरणोपरान्त ''भारत रत्न'' दिया गया तो ''अन्ना द्रुमक'' ने यह कहकर उसे लेने से इन्कार कर दिया कि इस पर देवनागरी लिपि में लिखा हुआ है। यह आम लोगों को राष्ट्रीयता से भटकाने और सस्ती लोकप्रियता हासिल कर सत्ता हथियाने का कुत्सिम खेल है। इनसे कोई पूछे क्या तमिलनाडू के लोग हिन्दी या संस्कृत नहीं पढ़ते हैं ? प्रदेश के छात्र खूब हिन्दी व संस्कृत पढ़ते हैं। कितने राजनेता हैं जो बखूबी हिन्दी जानते हैं लेकिन जान बूझकर हिन्दी प्रयोग नहीं करते क्योंकि हिन्दी बोलने पर उनका यह राजनैतिक शस्त्र कुन्द हो सकता है। ऐसे कितने ही उदाहरण दिए जा सकते हैं कि जब स्वार्थसिद्धि की बात सामने हो तो तमिलनाडू के लोग खूब हिन्दी बोलते हैं। तमिलनाडू में हिन्दी संगोष्ठी में गए कांग्रेस सांसद ''बाल कवि वैरागी'' को तमिल भाषी चालक प्रतिदिन संगोष्ठी स्थल से उनके आवास तक लाता ले जाता था। वह टूटी फूटी अंग्रेजी व तमिल में ही सांसद महोदय से कोई बात होने पर उत्तर देता था तथा कहता था-''आई डोन्ट नो हिन्दी'' लेकिन जब किसी दिन सांसद जी के एक परिचित ने सांसद जी से हिन्दी में निवेदन किया कि-सर मेरे अधिकारी मेरी पदोन्नति बिना किसी कारण के रोके हुए हैं आप कृपा करके मेरी पदोन्नति के लिए उनको कहेंगे तो मेरी पदोन्नति अवश्य ही उन्हें करनी पड़ेगी। यह बात सुनते ही चालक तुरन्त सांसद महोदय से हिन्दी में बोला-सर मैं इतने दिन से आपकी सेवा कर रहा हूं मुझे कई साल की सेवा होने पर भी पक्का नहीं किया जा रहा है। आप कृपा करके मेरा भी काम करा दें। सांसद जी ने हिन्दी बोलते देखकर उससे कहा-अरे, तू तो कहता था मुझे हिन्दी नहीं आती। अब अपना काम निकालने के लिए कैसे हिन्दी आ गई तुझे। झेंपते हुए चालक बोला-सर गलती हो गई। थोड़ी थोड़ी तो बोल लेता हूं लेकिन पूरी बात नहीं बोल सकता। इसलिए आपसे शरमा कर कह दिया था। एक बार प्रो० ओमप्रभात ट्रेन में यात्रा कर रहे थे एक तमिल परिवार उनके पास ही बैठा था। यह परिवार हिन्दी बोलने पर उत्तर नहीं दे रहा था लेकिन काफी देर इंग्लिश में बात करते करते किसी धार्मिक मुद्दे पर बात होने लगी तो अचानक उनमें से एक लगभग 25-30 वर्ष का युवा हिन्दी बोलने लग गया।

इस प्रकार यह देखने में आया है कि तमिलनाडू में हिन्दी विरोध का मुद्दा जीवित रखने के लिए राजनेताओं ने सिर धड़ की बाजी लगा रखी है। लोगों में यह भावना कूट कूट कर भरी गई है कि भले ही अपनी जरूरत के लिये हिन्दी पढ़ो लेकिन जहां तक सम्भव हो यह प्रकट मत होने दो कि हमें हिन्दी आती है। हिन्दी का विरोध हर हाल में करो। यदि हिन्दी लागू हो गई तो हम पिछड़ जाएंगे।

पं० जवाहरलाल नेहरू ने जगाया हिन्दी विरोध

अनेक समस्याओं की तरह हिन्दी विरोध के मुद्दे को पनपने का मौका भी पं० जवाहरलाल नेहरू ने ही देश को दिया। जब 1959 में उन्होंने संसद में कहा कि ''हिन्दी किसी पर थोपी नहीं जाएगी'' तो तमिलनाडू के लोगों को अहसास हुआ कि हमारे ऊपर हिन्दी थोपने का उपक्रम चल रहा है अब हम इसे सफल नहीं होने देंगे। आजादी से पूर्व तथा आजादी के तुरन्त पश्चात् हिन्दी का दूर दूर तक कहीं भी विरोध नहीं था। हां इतनी बात की बहस जरूर थी कि संस्कृतनिष्ठ हिन्दी चले, तो कुछ सांसद कहते थे कि आम बोलचाल की भाषा चले, जिसे गांधी जी ''हिन्दुस्तानी' कहते थे। कुछ विवेकशील सांसदों ने जो कि पूरी सांसद के 50 प्रतिशत थे, उन्होंने कहा था कि-भारतीय भाषाओं में एकरूपता लाने, उन्हें पुष्ट करने तथा भारतीय धर्म, दर्शन व विज्ञान को विकसित करने के लिए, सबके लिए सहज व समान भाषा संस्कृत को ही देश की राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित करना चाहिए यह हम भारतीयों के लिये गौरव की बात होगी लेकिन श्री नेहरू ने ''15 वर्ष तक अंग्रेजी सह राजभाषा रखी जाए'' यह बात कहकर ऐसी लंगड़ी मारी की हिन्दी संस्कृत सहित सारी भारतीय भाषाएँ चारों खाने चित्त हो गई। यह भारत की भाषाओं ही नहीं अपितु भारत राष्ट्र की पीठ में छुरा घोंपा गया था। जो देश नया नया स्वतंत्र हुआ था उसे भाषायी और सांस्कृतिक गुलामी की ओर मोड़ दिया गया। उसी का परिणाम है कि आज शिशुशाला से लेकर शिक्षा के अन्तिम चरण तक अंग्रेजी व अंग्रेजीयत हावी है। संस्थाओं व कार्यालयों में टाई परिधान का अनिवार्य भाग है जबकि इंग्लैंड, अमेरिका, जापान आदि देशों में टाई को हानिप्रद मानकर इस पर रोक लगाई गई है। इस शिक्षा ने देश में ऐसा वातावरण पैदा कर दिया है कि आज का भारतीय नागरिक अपनी भाषा व संस्कृति को अत्यन्त हीन समझकर देश को पददलित करने वाले मालिकों का अन्धानुकरण कर रहा है। जिसके कारण से विदेशी कम्पनियां हमें अनेक प्रकार से लूट रही हैं। श्रीमती इंदिरा गांधी के समय हिन्दी शब्दकोष तैयार हुए पुस्तकें लिखी गई सभी संस्थाओं में हिन्दी इंगलिश शब्द सूचियों के चार्ट भेजे गए लेकिन उच्च स्तर पर अंग्रेजी जारी रहने के कारण प्रयास सफल नहीं हुआ।

स्वतंत्रता पूर्व का तमिलनाडू

तमिलनाडू के पहले मख्यमंत्री जो भारत के पहले गवर्नर जनरल भी रह चुके थे उन श्री सी. गोपालचारी ने ''दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा'' स्थापित की थी तथा स्पष्ट कहा था कि-हिन्दी के अतिरिक्त अन्य कोई भी भाषा भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती अत: सबको हिन्दी राष्ट्रीय कर्तव्य के रूप में श्रद्धा से सीखनी चाहिए। आज के तमिलनाडू के राजनेता अपने पूर्वजों के मार्ग से भटककर राष्ट्रद्रोह के पथ पर चलने की कोशिश कर रहे हैं। वे तमिलनाडू के महान् हिन्दी कवि ''सुब्रह्मण्यम भारती'' को भी भूल रहे हैं जिन्होंने हिन्दी के माध्यम से साहित्य रचकर भारत राष्ट्र की सेवा की थी। 1265 ई० में ''अलाऊद्दीन खिलजी'' ने देवगिरी तक फैले अपने शासन में हिन्दी में ही कामकाज किया था। 1327 ई० में ''मुहम्मद तुगलक'' ने देवगिरी को ही दिल्ली के बजाय अपनी राजधानी बनाया था। तब पूरे दक्षिण में हिन्दी में ही काम चलता था। साहित्य व राजकाज की भाषा हिन्दी थी। मुसलमान लेखक हिन्दी में लिखते थे। जिसे ''दक्षिणी हिन्दी'' कहा जाता था। आज भी तमिलनाडू के व्यक्ति ने ही रुपये का प्रतीक र देवनागरी लिपि में ही बनाया है।

वेदों की रक्षा दाक्षिणत्य परिवारों ने ही की। आज भी वेदपाठ में कोई संदेह होने पर दक्षिण के वेदपाठियों को ही प्रमाण माना जाता है। वेदों के ज्ञान के उद्धार के लिए चिन्तित रहने वाले कुमारिल भट्ट, वेद उद्धारक प्रथम शंकराचार्य, रामनुजाचार्य, आनन्दतीर्थ, वल्लभाचार्य, निम्बार्क आदि धर्म गुरु दक्षिण की ही देन हैं। आज भी तमिलनाडू में संस्कृत बड़ी श्रद्धा से पढ़ी जाती है। संस्कृत जाने बिना तमिल सहित किसी भी एशिया की भाषा का कोई विद्वान् नहीं बन सकता। हिन्दी संस्कृत की वर्णमाला व लिपि समान हैं। पूरे भारत में भी संस्कृत सभी प्रदेशों में पढ़ी जाती है जिसके कारण से हिन्दी पढ़ने और बोलने और समझने में कोई कठिनाई नहीं है। तमिलनाडू के सभी लोगों के गांव व नगरों के नाम शुद्ध संस्कृत व हिन्दी में ही हैं। वहां की एक पार्टी का नाम **प्रजाराज्यम पार्टी** है। करुणानिधि, जयललिता, सुब्रह्मण्यम आदि नाम शुद्ध संस्कृत व हिन्दी के ही हैं तो क्या इन्हें समुद्र में डूब जाना चाहिए या अपने नाम बदल लेने चाहिएं ??? क्या संस्कृत देवनागरी लिपि में है तो तमिलनाडू के भाइयों को संस्कृत नहीं पढ़नी चाहिएं ? वे तो खूब संस्कृत पढ़ रहे हैं। कितनी ही राष्ट्रीय संगोष्ठियों में तमिलनाडू के विद्वान् धाराप्रवाह शुद्ध हिन्दी बोलते हैं जो उत्तर भारतीयों से कहीं अधिक शुद्ध होती है। अत: यह स्वत: सिद्ध है कि तमिलनाडू में हिन्दी का विरोध नहीं है यह केवल एक राजनैतिक दाव है जिसके फन्दे में कुछ लोग अवश्य फंस जाते हैं। लेकिन राष्ट्रभाषा से द्रोह राष्ट्रद्रोह है। राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत, राष्ट्रभाषा का अनादर सीधे राष्ट्रद्रोह है। करुणानिधि की बजाय जयललिता के दिल में हिन्दी विरोध के भाव नहीं हैं लेकिन मजबूरीवश यह मुद्दा उठने पर वोट कटने के भय से उसे भी मुद्दे का समर्थन करना पड़ता है। केरल, कर्नाटक, आन्ध्र, तेलंगाना में हिन्दी का कोई विरोध नहीं है। पूर्वोत्तर के राज्यों में हिन्दी विरोध नहीं है। अरुणाचल प्रदेश के सांसद व केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री

शेष पृष्ठ 8 पर....

thearyasamaj.org

स्थितप्रज्ञ

-: वेद-मन्त्र :-

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः।
एवा ते राज्यं मनः॥ साम० 10/232

शब्दार्थ-एवा (अवश्य) हि (निश्चय से) वीरयुः (वीरता युक्त) एवा (ही) शूरः (दोषनिवारक) उत (और) स्थिरः (स्थितप्रज्ञ) एवा (इस प्रकार) ते (तेरा) मनः (मन) राज्यम् (सिद्ध है)।

भावार्थ-हम वीर, शूर, स्थिर व सिद्ध मन वाले बनें।

व्याख्या-आज अनेक प्रकार के समाज सुधारक, गुरु कहलाने वाले, मत-मतान्तर वाले, यहाँ तक हाली तथा गोपाल भी सुधार की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। परन्तु—**बढ़ता ही गया मर्ज ज्यों-ज्यों दवा की। आग में शोले उठे ज्यों-ज्यों हवा की॥** सुधार के ठेकेदार अधिक बढ़ने के साथ-साथ बुराइयाँ तथा बुरे व्यक्ति भी साथ-साथ बढ़ते जा रहे हैं। बारह यात्रियों ने एक नदी को पार किया। प्रत्येक के द्वारा गणना करने पर एक व्यक्ति कम मिला। सभी रो रहे थे, दूरस्थ एक व्यक्ति ने रोने का कारण पूछा। सभी ने एक स्वर से कहा कि हम बारह व्यक्तियों ने दरिया पार करने से पहले एक मनुष्य से गणना कराई थी। परन्तु दरिया पार करने के पश्चात् हम सभी ने गणना की है। एक व्यक्ति कम मिलता है। व्यक्ति ने एक-एक जूता मारकर गणना उनसे स्वयं कराई। सभी प्रसन्न हो व्यक्ति को पारितोषिक देकर यात्रा के लिये चल पड़े। प्रत्येक यात्री अपनी गणना करना भूल जाता था।

सभी सुधार करना चाहते हैं। प्रत्येक एक दूसरे का सुधार कर रहा है। अपने सुधार का कोई ध्यान नहीं। इसी कारण से पाप बढ़ रहा है। मन्त्र स्पष्ट बता रहा है कि मनुष्य को सबसे पहले स्वयं स्थितप्रज्ञ होना चाहिये। चञ्चल मन वाला व्यक्ति जब स्वयं ही अव्यवस्थित है तो किसको सुधार पायेगा। संयमी बनना तथा बनाना ही मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। यह सबसे आवश्यक बड़ा कार्य है। सबसे कठिन है। अभ्यास व वैराग्य ही इस कठिन कार्य को सरल कर सकता है। सभी जानते हैं कि क्रोध नहीं करना चाहिये। परन्तु घटनास्थल पर विवेक को खो बैठता है। जब आये ज्वार-भाटा। नहीं डटे किसी का रोका। चाहे रस्से लो बांध। ऐसी भयंकर अवस्था क्रोधी की बन जाती है। एक व्यक्ति ने अपने पुत्र को कुछ सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखने हेतु कहा। पुत्र आज्ञाकारी तथा सुशील था। भूलने के फलस्वरूप उसी कार्य को न कर पाया। क्रोधी ने इतना बालक को पीटा कि वह मर गया। क्रोधवश ऐसा कर गया। उस व्यक्ति को वह बालक अतीव प्रिय था। वह स्वयं भी आत्महत्या कर मर गया। असंयमी मनुष्यों की ऐसी ही दुर्दशा क्रोध, लोभ, मोह आदि के कारण होती है।

—आचार्य बलदेव

सम्मानित पाठक कृपया ध्यान दें...

यदि 'आर्य प्रतिनिधि' न मिले तो...

सम्मानित सदस्यो! '**आर्य प्रतिनिधि**' आपकी सेवा में प्रत्येक माह की 7, 14, 21, 28 तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुनः प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें '**आर्य प्रतिनिधि**' लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में रोहतक कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर अथवा सम्भव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर-संबंधित प्रखण्ड से भी इसकी शिकायत करें। हम तो, अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको '**आर्य प्रतिनिधि**' यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो।

सम्पादक-'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक फोन : 01262-216222, मो० 7206865945

हमारे सामाजिक समरसता की ओर बढ़ते कदम-

जाति-पाति की दीवारें नहीं हैं अब...

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

आज हमें स्वतन्त्र हुए 67 वर्ष हो गए हैं। इन वर्षों में हमने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत उन्नति की हैं। आज विश्व में हमारे वैज्ञानिकों, चिकित्सकों तथा इंजीनियरों का अपना विशेष स्थान है। आज सामाजिक समरसता की दिशा में हमारे कदम बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं। ऐसा लगता है कि भविष्य में जाति-पाति का नामोनिशान मिट जाएगा। कुछ वर्ष पहले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र में दूरी थी लेकिन अब यह दूरी लगभग समाप्त हो चुकी है। सभी जातियों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं, मिल-जुलकर काम करते हैं। एक दूसरे के सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यह देश के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। जहां मुस्लिम देशों में सुन्नी और शिया के बीच नित्य प्रति दिल दलहाने वाली हिंसा की घटनाएँ हो रही हों, वहां हिन्दुस्तान में सामाजिक समरसता की बयार बह रही हो—यह भविष्य में आगे बढ़ने का ही संकेत है।

जैसे-जैसे भारत में ग्रामीण आंचल में रहने वाले लोगों का रोजगार के लिए नगरों में बसने का आकर्षण बढ़ा है, वैसे-वैसे जातिवाद भी समाप्त हुआ है। देश में बढ़ रहे औद्योगिकीकरण ने, शिक्षा के विस्तार ने सब प्रकार की जातिगत दीवारें तोड़ दी हैं। सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं गैर-सरकारी सेवाओं में कार्यरत लाखों कर्मचारी नित्यप्रति बसों, रेलों से मिलकर यात्रा करके अपने-अपने दफ्तरों में काम करने पहुंचते हैं। इससे भी जातीय भेदभाव समाप्त हो गए हैं। स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में आज लाखों छात्र-छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, इससे भी सामाजिक समरसता के रिश्ते मजबूत हुए हैं।

अब वंचित समाज, दलित समाज और शोषित समाज की अवधारणा लगभग धूल में मिल चुकी है। सभी जातियों के नवयुवक, नवयुवतियां पढ़-लिखकर ऊँची सरकारी नौकरियों में पहुंचने लगे हैं। उच्च प्रशासनिक पदों पर विराजमान होने लगे हैं। उच्च राजनैतिक दायित्वों को सम्भालने लगे हैं। निश्चय ही हम जातिय बन्धनों से ऊपर उठकर सामाजिक समरसता की ओर बढ़ रहे हैं। निश्चित रूप से भारत अपने नये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आगे बढ़ेगा।

नया सारथी, नया रथ।
नया युग, नया भारत॥

वेदप्रचार व गोरक्षा कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 6 जुलाई 2014 को गाँव मंडोरा (सोनीपत) में श्री महेन्द्रसिंह दहिया ने अपनी पौत्री रिद्धि का जन्मदिन वैदिक रीति से यज्ञ-वेदप्रचार व गोरक्षा कार्यक्रम का आयोजन करके मनाया जिसमें आर्यसमाज मंडोरा तथा अन्य गांववासी शामिल हुए। यज्ञ-ब्रह्मा श्री हरिओ३म् शास्त्री ने अपने वैदिक विचार, जन्मदिन मनाने की विधि, वेद, संस्कृति तथा गौ के महत्त्व पर विचार रखते हुए मंच का संचालन किया। इस कार्यक्रम के मुख्यवक्ता श्री देवानन्द शास्त्री (हालैंड) ने अपनी संस्कृति-सभ्यता तथा वेदों के महत्त्व पर बोलते हुए मातृभूमि, देशभक्ति तथा ईश्वर भक्ति के गीत सुनाकर भावविभोर कर दिया। अन्त में श्री सुखवीरसिंह दहिया ने सभी का धन्यवाद करते हुए जन्मदिन क्यों मनाना चाहिये, गौ की रक्षा क्यों करनी चाहिये तथा ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना करके इसका एक विधान दिया जिसका नाम वेद है, की व्याख्या करते हुए बड़े विस्तृत ढंग से सबके बारे में बताया तथा आयोजकों की तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता श्री रामकिशन, जगदीश, ईश्वरसिंह, सेवा-निवृत्त नामराशि सुखवीर सिंह सहायक अभियन्ता की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा आर्यसमाज, वेदप्रचार तथा गोरक्षा के कार्य को आगे बढ़ाने के लिये प्रेरित किया। अंत में शान्तिपाठ के बाद सबको प्रसाद आदि देकर कार्यक्रम का समापन किया तथा आगे एक कई गांव इकट्ठा करके कार्यक्रम करवाने की योजना बनाई तिथि बाद में सूचित की जायेगी।

—सुखवीर सिंह दहिया,
तिलकनगर, रोहतक

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

thearyasamaj.org

ईश्वर, वेद, महर्षि दयानन्द और मूर्तिपूजा

❑ मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य समाज नामक संस्था व संगठन के संस्थापक हैं। उन्होंने 10 अप्रैल सन् 1875 को मुम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य समाज, देश व विश्व से अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीति, अधर्म, अन्याय, शोषण, पक्षपात, ईश्वर की गलत विधि से पूजा व उपासना आदि को दूर करने के लिए की थी। इसके साथ उनका उद्देश्य था कि सारे संसार के सभी मनुष्य सत्य को ग्रहण व असत्य का त्याग करें तथा अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करें। आर्य समाज के 10 नियम हैं जो संसार की सभी संस्थाओं व संगठनों से उत्कृष्ट व मानव जाति के लिए सर्वाधिक हितकर हैं। इसके बाद भी संसार के लोगों ने यदि आर्य समाज को पूर्ण रूप से नहीं अपनाया है तो इसके पीछे उन मनुष्यों व उनके धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक नेताओं का अज्ञान व स्वार्थ है। आज हम देख रहे हैं कि सारे संसार के सभी मतों व पन्थों में अनेक बाते अज्ञान व अविद्या से पूर्ण हैं जिससे मनुष्यों को भारी हानि हो रही है। यहां तक की आज के उच्च-शिक्षित मनुष्यों को स्वयं अर्थात् आत्मा का भी पूर्ण ज्ञान नही है। ईश्वर का जितना ज्ञान है वह भी आधा-अधूरा व अधिकांश मिथ्या ज्ञान है। ईश्वर कैसा है? ईश्वर वह है जिससे यह सृष्टि व ब्रह्माण्ड अस्तित्व में आता है। उस ईश्वर का स्वरूप सत्य, चित्त व आनन्दयुक्त, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, अजन्मा, अमर, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, अजर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टि को बनाना, चलाना व प्रलय करना है। यह ईश्वर का वास्तविक स्वरूप है, परन्तु यह स्वरूप सभी मत व पन्थों की पुस्तकों में नदारद ही है। ईश्वर कर्मों का फल प्रदाता है। पाप क्षमा नहीं होते। यदि वह क्षमा करता है तो वह न्यायकारी नहीं रहेगा जबकि अनेक मत सस्ती लोकप्रियता के लिए स्वीकार करते हैं कि उनके मत को ग्रहण कर लेने, अर्थात् धर्मान्तरण करने पर, उनके पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। हमें लगता है कि इससे बड़ा असत्य या झूठ संसार में और कुछ नहीं हो सकता है। यह ईश्वर पर एक प्रकार से झूठा आरोप है। ऐसी अनेकानेक अज्ञानपरक बातें संसार के सभी मत, पन्थ व सम्प्रदायों में पाईं जातीं हैं। इनसे यदि कोई मुक्त है तो वह केवल एक ही संस्था व संगठन है जिसका नाम ''आर्य समाज'' है। 'आर्य' का अर्थ होता है कि श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव से युक्त मनुष्य। जिस मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभाव, आचार व विचार, उसका ईश्वर व आत्मा व प्रकृति का ज्ञान, उपासना आदि श्रेष्ठ व सत्य हैं, वह मनुष्य या व्यक्ति, स्त्री वा पुरूष आर्य संज्ञा का अधिकारी है। अंग्रेजी में ऐसे मनुष्य को हम gentleman कह सकते हैं।

महर्षि दयानन्द जब सन् 1863 में अपने गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती की आज्ञा से कार्य क्षेत्र में उतरे तो उन्होंने विचार किया कि किस प्रकार से अज्ञान के अन्धकार को दूर किया जाये। उस समय देश गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहा था। 5 या 6 वर्ष पहले ही सन् 1857 की क्रान्ति हो चुकी थी जो कि अनेक कारणों से विफल रही। स्वामी दयानन्द ने उस क्रान्ति के विफल होने पर भी विचार किया। उन्होंने पाया कि देश में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, बाल विवाह, बेमेल विवाह, अशिक्षा, अज्ञान, जातीय एकता व संगठन का अभाव, नाना प्रकार के मत-सम्प्रदाय, नाना प्रकार के धर्म पुस्तक, नाना प्रकार की परस्पर विरोधी धार्मिक व सामाजिक मान्यतायें, राजनैतिक सोच, चिन्तन व संगठन का अभाव आदि गुलामी, दासता व पराधीनता के मुख्य कारण थे। उन्होंने विचार मन्थन में पाया कि मूर्ति पूजा यदि समाप्त हो जाती है तो लोग सच्चे ईश्वर की उपासना में प्रवृत्त होगें जिससे बुद्धि व ज्ञान में वृद्धि होगी और अन्य सभी समस्यायें स्वतः ही समाप्त हो जायेंगी या उनका हल मिल जायेगा।

अतः उन्होंने पुनःपुनः वेदों का आलोड़न किया और वह आश्वस्त हो गये कि चारों वेदों में मूर्ति पूजा का कहीं विधान नहीं है। युक्तियों, तर्क आदि प्रमाणों से भी मूर्तिपूजा को उचित या जायज नहीं ठहराया जा सकता। अतः उन्होंने धर्म की नगर काशी की ओर प्रस्थान किया और काशी के पण्डितों को मूर्तिपूजा को वेद सम्मत सिद्ध करने के लिए ललकारा। इधर महर्षि दयानन्द पण्डितों को ललकार रहे थे और दूसरी ओर सभी पण्डित वेदों के ज्ञान से शून्य थे। उनमें वेदों का अध्ययन करने के लिए आवश्यक आर्ष व्याकरण के साथ योग, उपासना, ध्यान आदि में गति न होने के कारण वह वेदों के तात्पर्य को समझने में पूरी तरह से अक्षम व असमर्थ थे। एक यह भी धर्म संकट था कि यदि वेद की माने तो आजीविका छीन जाती है और मूर्तिपूजा करके उनके वारे-न्यारे हो रहे थे। इससे देश पतन व रसातल में जा चुका था और यदि कुछ बचा था तो वह भी शीघ्र ही समाप्त होने की स्थिति में था।

ऐसी विषम स्थिति में हमारा देश व इसकी धर्म व संस्कृति थी। काशी के राजा ईश्वरी नारायण सिंह काशी के पण्डितों व विद्वानों के पोषक व उनके पालक थे। महर्षि दयानन्द की मूर्तिपूजा को वेद सम्मत सिद्ध करने की ललकार से उनकी गरिमा घट रही थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने शीर्षस्थ पण्डितों, स्वामी विशुद्धानन्द आदि को बुलाकर स्वामी दयानन्द को समुचित उत्तर देने को कहा। कहीं न कहीं राजाजी के मन में भी खटका था कि महर्षि दयानन्द का पक्ष सत्य है। अतः सभी येन-केन-प्रकारेण स्वामी दयानन्द का विरोध करने पर उतारू हो गये। मूर्तिपूजा पर काशी में शास्त्रार्थ के दिन 16 नवम्बर, सन् 1869 को शास्त्रार्थ स्थल आनन्द बाग में लगभग 50,000 दर्शकों की भीड़ इकट्ठी हो गई। काशी के इतिहास में सम्भवतः अपने प्रकार का यह पहला ऐतिहासिक शास्त्रार्थ था। एक ओर महर्षि दयानन्द अकेले थे तो दूसरी ओर पण्डितों की फौज थी। शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। काशी के पण्डितों ने स्वामी दयानन्द को उलझाना चाहा परन्तु उसमें भी वह असफल रहे। काशी के पण्डितों के यह घोषित करने पर कि हमें सभी शास्त्र स्मरण हैं, स्वामी दयानन्द ने उन्हें धर्म के स्मृति में दिए गए लक्षण बताने को कहा। इस पर सब पण्डित चुप थे, बाल शास्त्री कुछ विचार कर बताने को उत्सुक लगे तो स्वामीजी ने उसे अधर्म के लक्षण बताने को कहा। वह भी निरूत्तर होने के कारण चुप रहे। घोर आश्चर्य है कि काशी के शीर्षस्थ पण्डितों को न धर्म के लक्षण ज्ञात थे न अधर्म के। उनकी यह प्रतिज्ञा कि उन्हें सभी शास्त्र स्मरण है, के भंग होने से उनकी एक हार तो ही गई। अब मूर्तिपूजा को वेद सम्मत सिद्ध करने का अवसर था। उन पण्डितवर्ग के पास कोई मूर्तिपूजा के समर्थन में वेद का कोई प्रमाण नहीं था और न ही उनमें से किसी ने प्रस्तुत ही किया। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने अपने वेदों के अथाह ज्ञान से काशी के सभी पण्डितों को, उन्हीं के दुर्ग में, मूर्तिपूजा का वेद में विधान न होने पर, मूर्तिपूजा को अनुचित सिद्ध कर दिया। इस प्रकार से उन दिनों देश व विदेशों में प्रचलित सबसे बड़ा अन्धविश्वास ''मूर्तिपूजा'' धराशायी हो गया और आज तक वह धराशायी है। सत्य का समर्थन व असत्य का खण्डन करने वाले महर्षि दयानन्द पर पत्थर व मिट्टी के गोले फेंके गये। उनके प्राण लेने के प्रयत्न भी किये गये परन्तु ईश्वर की कृपा से वह इस दुर्घटना में बाल-बाल बच गये। हम सनातन धर्मी कहलवाने वाली इस हिन्दू जनता को क्या कहें जो उस असिद्ध, वेद-विरूद्ध व युक्ति-तर्क विरूद्ध ईश्वर की मूर्तिपूजा वा उपासना को किये चली जा रही है। इसे हम अपना व देश का दुर्भाग्य मानते हैं। इसी प्रकार से अन्य अन्ध-विश्वास अवतारवाद, फलित ज्योतिष, अशिक्षा आदि भी पल्लवित और पुष्पित हो रहे हैं। शिक्षा में नैतिकता समाप्त होकर नैतिकता, धर्म व सामाजिक मूल्यों का स्थान आधुनिकता व पाश्चात्य की मूल्य-विहीन शिक्षा व कुसंस्कारों ने ले लिया है। मूल वैदिक धर्म व प्राचीन संस्कारों से युक्त संस्कृति पर अस्तित्वहीन होने के खतरे मंडरा रहे हैं। क्या आने वाले समय व युगों में वैदिक धर्म सुरक्षित रह पायेगा, इसका उत्तर देना अत्यन्त कठिन है। यद्यपि स्वामी दयानन्द काशी शास्त्रार्थ वाले दिन विजयी रहे परन्तु वह इसके बाद भी 5 बार काशी गये, मूर्तिपूजा का वेदों से विधान दिखाने के विज्ञापन उन्होंने दिये परन्तु कोई सामने नहीं आया। अतः मूर्तिपूजा वेद विहित न होकर वेद विरूद्ध थी व है।

हम मूर्तिपूजा की असारता पर सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में स्वामी दयानन्द द्वारा प्रस्तुत विचार आगे उद्धृत कर रहे हैं जिससे समझदार लोगों को लाभ हो सकता है। स्वामीजी ने प्रश्न किया है कि मूर्तिपूजा कहां से चली। उनका उत्तर है कि जैनियों से चली। प्रश्न किया कि जैनियों ने कहां से चलाई? इसका उत्तर उन्होंने दिया कि अपनी मूर्खता से। पुनः प्रश्न किया कि जैनी लोग कहते हैं कि शान्त ध्यानावस्थित बैठी हुई मूर्ति देख कर अपने जीव का भी शुभ परिणाम वैसा ही होता है। इसका उत्तर वह देते हैं कि जीव चेतन और मूर्ति जड़ है। क्या मूर्ति के सदृश जीव भी जड़ हो जायगा? यह मूर्तिपूजा केवल पाखण्ड मत है जिसे जैनियों ने चलाया है। हम पाठको से निवेदन करते हैं कि वह सत्यार्थ प्रकाश का मूर्तिपूजा का पूरा प्रकरण पढ़कर लाभान्वित हों। इसी समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने मूर्तिपूजा के 16 दोष गिनायें हैं। पहला दोष यह है कि साकार मूर्ति में मन स्थिर कभी नहीं हो सकता क्योंकि उस को मन झट ग्रहण करके उसी के एक-एक अवयव में घूमता है और दूसरे में दौड़ जाता है। और निराकार अनन्त परमात्मा के ग्रहण में यावत्सामर्थ्य मन अत्यन्त दौड़ता है तो भी अन्त नहीं पाता। ईश्वर के निरवयव होने से चंचल भी नहीं रहता किन्तु उसी के गुण, कर्म, स्वभाव का विचार करता-करता आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जाता है। और जो साकार में स्थिर होता तो सब जगत् का मन स्थिर हो जाता क्योंकि जगत् में मनुष्य, स्त्री, पुत्र, धन, मित्र आदि साकार में फंसा रहता है परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता, जब तक कि निराकार ईश्वर में मन को न लगावे। क्योंकि निरवयव ईश्वर के होने से उस में मन स्थिर हो जाता है। इसलिये मूर्तिपूजा करना अधर्म है। दूसरा--उस में क्रोड़ों रूपये मन्दिरों में व्यय करके दरिद्र होते हैं और उस में प्रमाद होता है। तीसरा--स्त्री पुरूषों का मन्दिरों में मेला होने से व्यभिचार, लड़ाई-बखेड़ा और रोगादि उत्पन्न होते हैं। चौथा-- उसी को धर्म, अर्थ, काम और मुक्ति का साधन मानके पुरूषार्थ रहित होकर मनुष्य जन्म व्यर्थ गवांता है। पांचवां--नाना प्रकार की विरूद्ध-स्वरूप नाम चरित्रयुक्त मूर्तियों के पुजारियों का ऐक्यमत नष्ट होके विरूद्धमत में चल कर आपस में फूट बढ़ा के देश का नाश करते हैं। छठा--उसी के भरोसे में शत्रु का पराजय और अपना विजय मान बैठे रहते हैं। उनका पराजय होकर राज्य, स्वातन्त्र्य और धन का सुख उनके शत्रुओं के स्वाधीन होता है और आप पराधीन भटियारे के टट्टू और कुम्हार के गदहे के समान शत्रुओं के वश में होकर अनेकविध दुःख पाते हैं। सातवां--जब कोई किसी को कहे कि हम तेरे बैठने के आसन व नाम पर पत्थर धरें तो जैसे वह उस पर क्रोधित होकर मारता वा गाली प्रदान देता है वैसे ही जो परमेश्वर की उपासना के स्थान हृदय और नाम पर पाषाणादि मूर्तियां धरते हैं, उन दुष्टबुद्धियों का सत्यानाश परमेश्वर

शेष पृष्ठ 5 पर....

thearyasamaj.org

ईश्वर, वेद, महर्षि दयानन्द और.... पृष्ठ 4 का शेष....

क्यों न करें? आठवां--भ्रान्त होकर मन्दिर-मन्दिर देश-देशान्तर में घूमते-घूमते दुःख पाते, धर्म, संसार और परमार्थ का काम नष्ट करते, चोर आदि से पीड़ित होते और ठगों से ठगाते रहते हैं।

नवमां--दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं, वे उस धन को वैश्या, परस्त्रीगमन, मद्य, मांसाहार, लड़ाई-बखेड़ों में व्यय करते हैं जिस से दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दुःख होता है। दशवां--माता-पिता आदि माननीयों का अपमान कर पाषाणादि मूर्तियों का मान करके कृतघ्न हो जाते हैं। ग्यारहवां--उन मूर्तियों को कोई तोड़ डालता या चोर ले जाता है तब हा-हा करके रोते रहते हैं। बारहवां--पुजारी परस्त्रियों के संग और पूजारिन परपुरूषों के संग से प्रायः दूषित होकर स्त्री-पुरूष के प्रेम के आनन्द को हाथ से खो बैठते हैं। तेरहवां--स्वामी सेवक की आज्ञा का पालन यथावत् न होने से परस्पर विरूद्ध-भाव होकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। चौदहवां--जड़ का ध्यान करने वाले का आत्मा भी जड़ बुद्धि हो जाता है क्योंकि ध्येय का जड़त्व धर्म अन्तःकरण द्वारा आत्मा में अवश्य आता है। पन्द्रहवां--परमेश्वर ने सुगन्धियुक्त पुष्पादि पदार्थ वायु व जल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिये बनाये हैं, न कि पुजारी जी द्वारा तोडताड़ के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिये बनाये हैं। उन को पुजारी जी तोड़ताड़ कर, न जाने उन पुष्पों की सुगन्धि कितने दिन तक आकाश में चढ़ कर वायु जल की शुद्धि करता और पूर्ण सुगन्धि के समय तक उस का सुगन्ध होता है, उस का नाश मध्य में ही कर देते हैं। पुष्पादि कीच के साथ मिल सड़ कर उलटा दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं। सोलहवां--पत्थर पर चढ़े हुए पुष्प, चन्दन और अक्षत आदि सब का जल आकाश में चढ़ता है कि जितना मनुष्य के मल का। और सहस्रों जीव उस में पड़ते व उसी में मरते और सड़ते हैं। ऐसे-ऐसे अनेक दोष मूर्तिपूजा के हैं जो सज्जन लोगों को त्याग देने योग्य हैं। और जिन्होंने पाषाणमय मूर्ति की पूजा की है, करते हैं और करेंगे, वे पूर्वोक्त दोषों से न बचे, न बचते हैं और न बचेंगे। यह प्रकरण सत्यार्थ प्रकाश में आगे भी जारी है परन्तु इसे हम यहीं समाप्त करते हैं। इस लम्बे उदाहरण से हमें मूर्तिपूजा से होने वाली हानियां विदित हो गई है। ज्ञानी व बुद्धिमान लोग इसे जान व समझकर मूर्तिपूजा से बचेंगे तो उनका कल्याण व उन्नति होगी, यह सुनिश्चित है।

मूर्तिपूजा क्या है? मूर्तिपूजा में एक मूर्ति होती जिसे ईश्वर का स्थानापन्न कहा जाता है। ईश्वर कहां है, कैसा है, क्या करता है, उसकी मूर्ति बन सकती है या नहीं, उसका स्वरूप कैसा है आदि, इन प्रश्नों की उपेक्षा करके पाषाण, मृत्तिका या धातु की मूर्ति बनाई जाती है। फिर हमारे पण्डितजी कुछ संस्कृत के श्लोकों व मन्त्रों का पाठ करके पूजा कराते हैं और कहा जाता है कि मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा हो गई है, अब यह मूर्ति साक्षात ईश्वर या देवता है। सब उस मूर्ति की पूजा करना आरम्भ कर देते हैं। जब कि प्राण प्रतिष्ठा का होना कथन मात्र है। किसी मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा हो ही नहीं सकती। ईश्वर भी नहीं कर सकता क्योंकि यह असम्भव है। प्राण प्रतिष्ठा करना एक ढ़ोग से अधिक कुछ नहीं है। ईश्वर मनुष्य व प्राणियों के शरीरों में जन्म से पूर्व प्राणों को प्रतिष्ठित करता है। यह कार्य ईश्वर ही करता है मनुष्य इसे कदापि नहीं कर सकता। मूर्तिपूजा में ईश्वर की मूर्ति व उसकी आकृति कैसी हो? वह तो ईश्वर के अनुरूप होनी चाहिये। ईश्वर के निराकार होने से उसकी आकृति होती ही नहीं है। अतः इन्हें विगत 2000 वर्षों में एक मान्यता घड़नी पड़ी कि मर्यादा पुरूषोत्तम राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, कैलाश पर्वत पर निवास करने वाले राजा शिवजी आदि ईश्वर के अवतार थे। इन्हें अवतार घोषित करने वाले पण्डितजी को किसने बताया कि यह सभी अवतार थे, तो कोई उत्तर किसी के पास नहीं है। इस प्रश्न से भी किसी को कोई सरोकार नहीं है कि ईश्वर के नाम पर उसकी मूर्ति बनाकर पूजा करना ईश्वर को पसन्द है या नहीं। भले ही ईश्वर मूर्तिपूजा को बुरा माने, परन्तु मूर्तिपूजा करने वालों के लिए प्रश्न अनावश्यक एवं गौण है। मूर्तिपूजक तो आंख, नाक व कान बन्द कर मूर्तिपूजा करेगा, उसे कोई रोक नहीं सकता, ऐसा ही चल रहा है। जिसका परिणाम हमने एक हजार वर्ष से अधिक की गुलामी के रूप में भोगा है। यदि अवतारवाद पर विचार करें तो यह भी तर्क व युक्ति आदि प्रमाणों के विरूद्ध सिद्ध होता है। सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व निराकर ईश्वर अवतार क्यों लेता है? इसका कोई सन्तोषजनक उत्तर मूर्तिपूजा के मानने वालों के पास नहीं है। ईश्वर सर्वशक्तिमान होने से वह सारे कार्य अपने निराकार स्वरूप में स्थित रहकर कर सकता है। आज भी कर रहा है। सारे ब्रह्माण्ड को उसने उत्पन्न किया व रचा है। इसका धारण विगत लगभग 2 अरब वर्षों से किया हुआ है। सारे ब्रह्माण्ड का संचालन भलीभांति वह निराकार स्वरूप में स्थित रहकर कर रहा है। अतः उसे अवतार लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। रावण व कंस को मारने का जहां तक प्रश्न है तो उसके बाद भी अनेक भयंकर निरंकुश राजा देश व विदेश में हो चुकें हैं। वह अपने कर्मों से व ईश्वरीय व्यवस्था से मरते रहे हैं और आगे भी ऐसा ही होता रहेगा। इसके लिए ईश्वर को अवतार लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। अंग्रेजों का भारत में राज्य था। रावण व कंस के अस्तित्व से कहीं अधिक विकट समस्या थी। धर्म व संस्कृति दांव पर थी। महर्षि दयानन्द की विचारधारा, आर्य समाज के अनुयायियों व देश के बलिदानियों जिनमें श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, अन्य क्रान्तिकारी, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, शहीद भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव आदि अगणित लोग थे, उन्होंने अपने जीवन व प्राण देकर आजादी को प्राप्त किया है। महात्मा गांधी जी का भी आजादी के आन्दोलन में मुख्य योगदान रहा है परन्तु हम समझते हैं कि जो व्यक्ति अपने प्राणों को बलिदान करता है उसका स्थान भी महत्वपूर्ण होता है। हमारा कहना मात्र यह है कि यदि ईश्वर ने रावण व कंस को मारने के लिए राम व कृष्ण के रूप में अवतार लिया तो अंग्रेजों को जिन्होंने हमारी धर्म, संस्कृति, भाषा, वेशभूषा व स्वत्व को समाप्त करने का उचित व अनुचित तरीके अपना कर उसे समाप्त व नष्ट करना चाहा व किया, तब तो ईश्वर को अवतार लेने में देर नहीं करनी चाहिये थी। परन्तु हमें लगता है कि तब हमारे पौराणिक बन्धुओं का ईश्वर या तो भूल गया था या उसकी अंग्रेजों से उनके अनुचित कार्यों में सहमति रही होगी। हमारा मानना है कि आजादी के आन्दोलन में सर्वाधिक योगदान महर्षि दयानन्द की विचारधारा, आर्य समाज के अनुयायियों की सक्रिय भूमिका और हमारे क्रान्तिकारियों का योगदान मुख्य था। नरम दल के नाम से जाने जाने वाले नेताओं व आन्दोलन का भी प्रभाव भी अवश्य था, परन्तु इस आजादी की विचारधारा को प्रेरणा व जन्म महर्षि दयानन्द के विचारों से प्राप्त हुआ था। अतः अवतारवाद की कल्पना मिथ्या सिद्ध होती है। हम चाहते हैं कि पाठक इस विषय को विस्तृत रूप से जानने के लिए महर्षि दयानन्द व आर्य विद्वानों के ग्रन्थों का अनुशीलन करें। हम यह भी अनुभव करते हैं कि हम जिन महापुरूषों की मूर्तियां बनाकर पूजा करते हैं, चाहे वह हमारे देश में हो व अन्य देशों में, उनके चित्र व आकृति यथार्थ न होकर हमारी कल्पनाओं पर आधारित हैं, इसका भी हमें ध्यान रखना है।

महर्षि दयानन्द के पिता कट्टर पौराणिक व शिवभक्त थे। महर्षि दयानन्द ने भी बचपन में मूर्तिपूजा की और शिवरात्रि के दिन शिव की मूर्ति - शिवलिंग पर चूहों को उछलते-कूदते देखकर उन्हें मूर्तिपूजा में अश्रद्धा व अविश्वास हो गया था। बाद में योग व वेदादि आर्ष ग्रन्थों के उनके अध्ययन से यह प्रमाणित हुआ कि मूर्तिपूजा अवैदिक, अनावश्यक, अनुचित व अधर्म है। हम मूर्तिपूजा की निस्सारता की एक मनोरंजक घटना प्रस्तुत करते हैं। किसी दूर स्थान से एक ग्रामीण अनपढ़ व्यक्ति सोमनाथ मन्दिर में भगवान शिव के दर्शन के लिए आया। मन्दिर में उस दिन अधिक भीड़ थी। यह व्यक्ति मन्दिर के एक कोने में खड़ा दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा था। पुजारी की दृष्टि इस व्यक्ति पर पड़ी तो उसने डांटते हुए उसे बाहर जाने को कहा। वह भोला व्यक्ति बोला कि 'मैं बहुत दूर से आया हूं। मुझे कुछ देर खड़ा रहने दीजिए, शायद् भगवान दर्शन दे दें।' इन शब्दों को सुनकर पण्डित जी नाराज होकर बोले कि मेरी कई पीढ़िया इस मन्दिर में पूजा करते हुए बीत गईं हैं। आज तक तो किसी को दर्शन दिए नहीं, तुझे कहां से दर्शन हो जायेगें। यह घटना हमने टंकारा में स्वामी जगदीश्वरानन्द के श्रीमुख से लगभग 8-9 वर्ष पूर्व सुनी थी जो मूर्तिपूजा का सटीक चित्रण करती है।

आजकल देश में मूर्तिपूजा को लेकर काफी चर्चा चल रही है। हमारा ज्ञान बताता है कि मूर्तिपूजा किसी भी रूप में उचित नहीं है। केवल योग की विधि से ही उपासना करनी चाहिये। वह सरल है, कहीं आना जाना नहीं है। घर में रहते हुए कुछ देर ध्यानावस्थित होकर ईश्वर का ध्यान करना ही ईश्वरोपासना है। कुछ स्वाध्याय करने से व दृण धारणा करने से लाभ होता है। संकल्प-पूर्वक कोई भी साध्य कार्य किया जाये तो वह सफल होता है। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में इसे करके दिखाया और आज उनके कोटिशः अनुयायी देश-विदेश में योग की रीति से ईश्वर के गुणों व कार्यों का ध्यान कर उसकी उपासना करते हैं। मूर्तिपूजा आस्था से जुड़ा प्रश्न नहीं है अपितु आस्था का सही अर्थ न जानने के कारण ऐसा कहा जाता है। पूर्ण सत्य में निष्ठा को आस्था कहते हैं। यहां सत्य नहीं अपितु अन्धविश्वास है, अतः मूर्तिपूजा को आस्था से जोड़ना उचित नहीं। जहा तक मूतिपूजकों का यह तर्क कि किसी विशेष दिवंगत व्यक्ति की मूर्तिपूजा से उनके मनोरथ पूर्ण होते हैं तो वह तो उस मूर्ति की पूजा न करने वाले, योगियों, आर्य समाजियों, नास्तिकों, ईसाईयों, मुसलमानों, बौद्धों, जैनियों व सिण्खों के मनोरथ भी पूरे हो रहे हैं। मनोरथों का पूरा होना मूर्तिपूजा के कारण से नहीं होता अपितु हमारे पुरूषार्थ व प्रारब्ध से होता है जिसे सर्वव्यापक व निराकर ईश्वर हमें प्राप्त कराता है। अतः ईश्वर व मूर्ति के स्वरूप को जानकर मूर्तिपूजा को छोड़ना धर्म है। मूर्तिपूजा पर स्थिर रहना व सत्य से आंखें मूंदे रहना अधर्म है। यह ऐसा ही है कि सच्चे ईश्वर को न मानकर उसकी काल्पनिक कृति को मानना। जैसे जीवित माता-पिता के स्थान पर उनके चित्र व मूर्ति को पूजना व जीवित माता-पिता की उपेक्षा करना। ऐसा ही कृत्य यह मूर्तिपूजा है जिससे प्रारब्ध बिगड़ कर दीर्घकाल में हानि होती है। ईश्वर सभी देशवासियों को सद्बुद्धि दें जिससे हम अन्धविश्वासों से बच सकें और सच्चे ईश्वर की वेद विधान से उपासना करें।

सूचना

पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज के आशीर्वचन से तथा **पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक** (रोजड़ वाले) की अध्यक्षता में गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) में दिनांक 13 अगस्त बुधवार से 17 अगस्त 2014 रविवार तक **पाँच दिवसीय आवासीय सरल आध्यात्मिक शिविर** का आयोजन स्त्री आर्यसमाज देव कालोनी रोहतक-09812792770 व वैदिक सरल आध्यात्मिक शिविर समिति रोहतक-09466008120 तथा आर्यावर्त टांसपोर्ट कंपनी रोहतक-09215676662 के द्वारा किया जा रहा है। लाभार्थी संपर्क करें। अन्य सम्पर्क सूत्र—

09355674547, 09416139382, 09728884949,
09466566064, 09896326718, 09255537679

रणवीर सिंह बल्हारा, प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

thearyasamaj.org

बलदाता प्रभु हमारी सन्तानों को बल दे

❑ डॉ० अशोक आर्य, 104, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

हमने जहां परमपिता परमात्मा से अपने सब अंगों की पुष्टि के लिए बल मांगा है, वहां हम अपनी संतान के लिए भी बल को बढ़ाने की प्रार्थना करें तथा ऐसा ही करने की प्रेरणा हम अपनी संतानों को दें। यह वेद का आदेश है। ऋग्वेद 3.53.18 इस बात की ही चर्चा कर रहा है।

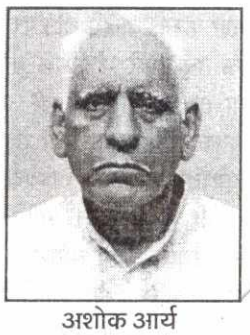

अशोक आर्य

बलं धेहि तनूषु नो बलमिन्द्रानलुत्सु नः।
बलं तोकाय तनयाय जीवसे त्वं हि बलदा असि॥

हमारी शिक्षा बल पर आधारित है। यदि शरीर में उत्तम बल है तो हम उत्तम शिक्षा को बड़ी सरलता से प्राप्त कर सकते हैं और यदि हमारा शरीर हृष्ट-पुष्ट व बलवान नहीं है तो हम ज्ञान प्राप्त करने में पिछड़ जाते हैं। हमारी आज की शिक्षा की यह एक बड़ी समस्या है कि आज का विद्यार्थी अनेक प्रकार के बेकार के झमेलों में फंसा होने के कारण शरीर से बलिष्ठ नहीं रह पाया है। इस कारण वह निरन्तर उत्तम ज्ञान से वंचित होता जा रहा है। अवस्था तो यहाँ तक आ गई है कि वह शिक्षा के साधनों व उद्देश्यों से ही दूर हो गया है। इसे पुनः इस मार्ग पर लाने के लिए वेद का यह मन्त्र प्रार्थना पूर्ण स्वर में उपदेश करते हुए कह रहा है कि—

हे प्रभु! हमारा उद्देश्य उत्तम ज्ञान को ग्रहण करना है, जिसके लिए हमें उत्तम बल की आवश्यकता है। आप सब प्रकार के बलों के स्वामी होने के कारण हमारे शरीरों में उत्तम बल को धारण करें। यह बल आपकी अपार कृपा से हमारे बैलों में भी धारण हो क्योंकि बैल भी पूरा दिन परिश्रम करते हैं। यह बल हमारे परिवार के पुत्र और पौत्रों को भी प्रदान करो ताकि वह उत्तम ज्ञान प्राप्त कर उत्तम जीवन को प्राप्त कर सके। प्रभु! आप निश्चय से ही बल के दाता हैं, बल के देने वाले हैं। इसलिए आप हमारे परिवार के छोटे-छोटे बच्चों, जिन्हें मैं पुत्र या पौत्र के रूप में जानता हूँ, को भी यह उत्तम बल दीजिये ताकि वह शरीर के इस बल के आधार पर पुरुषार्थ करते हुए उत्तम ज्ञान को प्राप्त करने में सक्षम हो सकें।

इस प्रकार यह मन्त्र स्पष्ट करता है कि सब प्रकार के उत्तम बलों के दाता वह पिता ही है। उनकी असीम अनुकम्पा ही हमें यह सब प्रकार के बल दिलाने में सक्षम होती है। इसलिए हमें अपने जीवन में प्रतिदिन के प्रत्येक क्षण प्रभु को स्मरण रखना होता है, उसकी स्तुति रूप प्रार्थना करनी होती है, स्वयं को प्रभु के चरणों में समर्पित करना होता है। इस प्रकार जब हम अपने पर उस पिता की दया बना पाने में सक्षम हो जाते हैं तो प्रभु की दयारूपी वर्षा हमारे ऊपर होने लगती है तथा उस दया को पाकर हम अपने शरीर को बल से सम्पन्न करने में सक्षम हो जाते हैं तथा बलवान होकर प्रभु के दिए वेद ज्ञान को हम सरलता से समझकर संसार में उत्तम काम करने में भी सक्षम हो जाते हैं।

मन्त्र के इस आदेश से यह तथ्य सामने आते हैं कि उत्तम शिक्षा की प्राप्ति के लिए शरीर के सब अंगों का बलवान होना आवश्यक है तथा वेद में शारीरिक, वाचिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक आदि सब प्रकार की शक्तियों के समान रूप से विकास पर बल दिया गया है। जब तक सब अंगों का समविकास नहीं होगा तब तक उत्तम ज्ञान से हम दूर ही रहते हैं। इस प्रकार वेद के मतानुसार यह समविकास ही हमारी शिक्षा का एक प्रधान ध्येय होता है।

यह खेद का ही विषय है कि हमारी आज की शिक्षा प्रणाली में वेद के इस समविकास शब्द की ओर किंचित भी ध्यान नहीं दिया जाता। समविकास, जो उत्तम शिक्षा की एक आधारभूत आवश्यकता है, उस आवश्यकता को आज की शिक्षा पद्धति ने दृष्टि विगत कर दिया है। मानसिक व बौद्धिक शक्ति का विकास करने का किंचित्-सा प्रयास किया जाता है, किन्तु शारीरिक और आत्मिक शक्तियां, जो उत्तम ज्ञान की प्राप्ति के लिए आवश्यक होती हैं, के विकास की ओर आज के शिक्षकों का ध्यान नहीं के बराबर ही जाता है। ध्यान, ईश्वरोपासनादि द्वारा जो आत्मिक शक्ति का विकास होता है, उस विकास की ओर तो आज विश्व के किसी भी क्षेत्र में ध्यान नहीं दिया जा रहा। हमारा देश भी इनकी गणना का ही एक भाग बन गया है। अतः आवश्यकता है कि आज पुनः उत्तम शिक्षा की प्राप्ति के लिए सबका ध्यान ब्रह्मचर्य पर हो तथा समविकास को शिक्षा का प्रधान ध्येय मानते हुए अपने शरीर के सब अंगों का समान रूप से विकास को ही हम अपना ध्येय बनावें तो निश्चय ही हम उत्तम ज्ञान के अधिकारी बनने में सक्षम होंगे।

आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय वीर भवन, पानीपत की
26 छात्राएँ मैरिट तथा 43 प्रथम श्रेणी में

पानीपत। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी द्वारा घोषित बारहवीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय वीर भवन पानीपत की 26 छात्राओं ने मैरिट सूची में तथा 43 छात्राओं ने प्रथम श्रेणी में अपनी गौरवशाली उपस्थिति दर्ज कराई है। विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। यह जानकारी स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती सुशीला जी ने दी। विद्यालय की प्रबन्ध समिति के सभी अधिकारियों ने सभी प्रतिभावान छात्राओं, अध्यापिकाओं व अभिभावकों को इस उपलब्धि पर हार्दिक शुभकामनाएं व बधाई दी।

—प्रिंसिपल, आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पानीपत

आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कॉलोनी रोहतक का निर्वाचन

दिनांक 5.7.2014 को सुबह 8 बजे हवन के बाद श्री दौलतराम राठी संरक्षक आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी रोहतक चुनाव अधिकारी की अध्यक्षता में वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें कर्णसिंह मोर को प्रधान चुना गया और कार्यकारिणी के गठन का भी अधिकार दिया गया।

प्रधान-श्री कर्णसिंह मोर, उपप्रधान-श्री जगतसिंह राठी, श्री सतपाल दहिया, मंत्री-श्री सुरेन्द्र आर्य, उपमंत्री-श्री रामकुमार हुड्डा, श्री रघुवीर काद्यान, कोषाध्यक्ष-श्री भूपेन्द्रसिंह, पुस्तकाध्यक्ष-श्री रामकुमार यादव, श्री वेदपाल नेहरा, लेखा-निरीक्षक-श्री रामकिशन, सलाहकार-श्री सूरजभान सिन्धु।

—कर्णसिंह मोर, प्रधान आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी रोहतक

शोक-सन्देश

सभा के मुख्यारेआम श्री परसराम पटवारी जी के बड़े भाई श्री हुकमसिंह ग्राम धनाना जिला सोनीपत का आकस्मिक निधन दिनांक 29 जून 2014 को 90 वर्ष की आयु में हो गया। वे अपने पीछे पूरा भरा परिवार छोड़ गए हैं।

उनकी शोकसभा दिनांक 4.7.14 को जसवीर कालोनी रोहतक में वैदिक विद्वान् डॉ० जगदेवसिंह विद्यालंकार तथा श्री सुखवीर दहिया के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर उपस्थित व्यक्तियों को सम्बोधित करते हुए डॉ० विद्यालंकार ने मृत्यु एवं परलोक के बारे में गहराई से व्याख्या की। उनके सम्बोधन की सभी ने प्रशंसा की।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर शोक व्यक्त करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा व्यथित परिवार को इस विकट दुःख को सहन करने की शक्ति देवें।

—सत्यवान आर्य, स०-कार्यालयाधीक्षक

निमन्त्रण-पत्र

सेवा में,

माननीय प्रधान/मन्त्री जी,

मान्यवर, समस्त आर्यसमाज हरयाणा

आपको सूचित किया जाता है कि **27 जुलाई 2014 रविवार को नई अनाजमण्डी जीन्द में महान् गोभक्त चौ० हरफूल जाट जुलानी वाले का 78वाँ बलिदान दिवस हरियाणा गोशाला संघ व गोरक्षा दल हरियाणा के तत्त्वावधान में पहली बार बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।** इस सम्मेलन की अध्यक्षता परम गोभक्त **पूज्य आचार्य बलदेव जी** प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली तथा मुख्य अतिथि **पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज** होंगे।

प्रदेश में गोहत्थे तोड़ने या 1967 के गोरक्षा आन्दोलन में कुर्बानी देने की बात हो, आर्यसमाज की उसमें अहम् भूमिका रही है। इसलिए आपसे अपील की जाती है कि अपनी आर्यसमाज से कम से कम एक वाहन लेकर इस सम्मेलन में अवश्य पहुंचने का कष्ट करें।

निवेदक :

(आचार्य विजयपाल) सभा-प्रधान

(रामपाल आर्य) सभा-मन्त्री

thearyasamaj.org

आर्य-संसार

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव द्वारा तपोवन देहरादून में सैद्धान्तिक एवं आध्यात्मिक शिविर आयोजित

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव की ओर से तपोवन देहरादून में 13, 14, 15 जून 2014 को सैद्धान्तिक एवं आध्यात्मिक शिविर लगाया गया जिसमें 90 आर्य बहन-भाइयों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। 12 जून को रात्रि दो बसें आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय गुड़गांव से देहरादून तपोवन के लिये रवाना हुई। 13 जून प्रात: वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून पहुंचे।

इस तीन दिन के कार्यक्रम में वैदिक साधन आश्रम के माननीय प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी, मन्त्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा एवं व्यवस्थापक श्री गर्ग जी का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ वहां आश्रम में रहने की बड़ी सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसमें 30 कमरे व सत्संग हाल एवं सुन्दर यज्ञशाला में बिस्तर समेत हमारे ठहरने व रहने की सुन्दर व्यवस्था की गई थी संयोगवश 14 जून को आर्यसमाज सैक्टर-7 एक्स गुड़गांव के श्री ईश्वरचन्द्र अरोड़ा जी का जन्म दिवस था वह उस दिन वहां यजमान बने और वेदमन्त्रों क माध्यम से आहुति प्रदान कर वैदिक रीति से अपना जन्मदिवस मनाया और सबका आशीर्वाद प्राप्त किया।

भोजन की सुन्दर व्यवस्था के लिये हलवाई हमारे साथ थे जो प्रात: सायं ताजा सात्त्विक भोजन तैयार कर हमारे सभी साधकों को खिलाते थे।

14 जून को प्रात: सत्संग के उपरान्त नाश्ता करके वैदिक साधन आश्रम के पास ऊपर पहाड़ी पर महात्मा आनन्द स्वामी जी की एवं स्वामी प्रभु आश्रित जी की साधना स्थली के दर्शन करने के लिए गये और दोपहर भोजन उपरान्त सहस्त्रधारा भी बसों द्वारा पहुँचे और वहाँ स्नान कर साधकों ने प्राकृतिक सौन्दर्य का भी अवलोकन किया।

15 जून को प्रात: सत्संग के उपरान्त भोजन किया और 12.30 बजे देहरादून से चलकर 2 बजे हरिद्वार पहुँचे, हरिद्वार में बाजार में लोगों ने खरीददारी की और सायंकाल गंगा स्नान कर वहां से प्रस्थान किया और फिर रास्ते में स्वामी रामदेव जी का पतञ्जलि योगपीठ में एक घण्टा रुके तत्पश्चात् गुड़गांव के लिए रवाना हुए। सभी लोग बसों द्वारा 16 जून प्रात: 4.30 बजे गुड़गांव पहुँचे।

आर्य केन्द्रीय सभा के माननीय प्रधान मा. सोमनाथ जी ने वैदिक साधन आश्रम के प्रधान श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री, मन्त्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा व प्रबंधक श्री गर्ग जी का हृदय से सुन्दर व्यवस्था के लिए धन्यवाद किया।

आचार्य श्री आशीष जी का और सभी आर्य बहन-भाइयों का भी सहयोग के लिए धन्यवाद किया तथा प्रधान जी ने अवगत कराया कि रु० 21,000/- आपके सहयोग से वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून को दान दिया गया। **'पवमान'** मासिक पत्रिका के 50 के लगभग नवीन वार्षिक सदस्य बनाये गये।

-प्रभुदयाल चुटानी मंत्री 9818781926

बाल-संस्कार शिविर सम्पन्न

दिनांक 22 से 29 जून 2014 को वैदिक योगाश्रम भऊ रोहतक में शिविर लगाया गया। आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में बालकों को आसन, प्राणायाम, खेल, यज्ञ, सन्ध्या के साथ-साथ प्रशिक्षण दिया गया। श्री आनन्द ने जूडो में अपने राष्ट्रीय चैम्पियन के अनुभव का मौका भी प्रदान किया। आचार्य जी की बालसुलभ शैली से बालकों ने श्लोक तथा हवन-मन्त्रों को शीघ्र कण्ठस्थ कर सभी को चकित कर दिया। इसी शैली से बालकों में चोरी त्याग, झूठ, क्रोध, द्वेष से बचने के आध्यात्मिक व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। प्रतिदिन बालकों से इन अवगुणों से बचने पर उन्हें पुरस्कृत भी किया गया। आचार्या प्रियंका द्वारा भजनोपदेश भी गांव में किया गया।

इसी प्रकार आचार्य जी के यज्ञ प्रचार-प्रसार से अनेक घरों में श्रद्धा से होते हैं। श्री रामकुवार, श्री रजनीश, श्री रमेश, श्री सन्दीप मास्टर भऊ आर्यपुर के घरों में इस जून माह आचार्य जी द्वारा यज्ञ किये गये। इसी प्रकार के यज्ञ गांव में श्रद्धा से किये जाते हैं।

—राहुल आर्य, भऊ आर्यपुर, रोहतक

सर्वोदय नेता स्व० दादा गणेशीलाल की पुण्यतिथि मनाई

दिनांक 22.6.2014 को को सर्वोदय भवन (गांधी अध्ययन केन्द्र) हिसार में स्वतन्त्रता सेनानी स्व० दादा गणेशी लाल की 24वीं पुण्यतिथि का० कृष्ण स्वरूप गोरखपुरिया की अध्यक्षता में मनाई गई। मुख्य वक्ता सर्वोदय नेता डॉ. भुवनेश गोस्वामी सिरसा थे। का० इन्द्रजीत रोहतक, का० धर्मवीर शर्मा आदि ने भी दादा जी को श्रद्धांजलि दी। सिरसा से पधारे डॉ० साहब ने दादा जी के जीवन व कार्य पर प्रकाश डालते हुए प्रेरणादायक संस्मरण सुनाए। दादा जी ने देश की आजादी में तथा इमरजेंसी में जेल गये। शराब आदि सामाजिक बुराइयों के खिलाफ बढ़-चढ़कर भाग लिया। उनका जन्म पटियाला में हुआ कार्यक्षेत्र हिसार रहा। वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, सुधीर एडवोकेट, संग्रामसिंह आर्य, श्रीमती जगवन्ती सांगवान आदि लगभग 50 व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम की समाप्ति पर जलपान की उत्तम व्यवस्था थी। अगली 29 तारीख को सर्वोदय के 50 वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण जयन्ती पर स्मारिका का विमोचन किया जाएगा।

—धर्मवीर शर्मा, प्रबन्धक

हमें मिल गया एक कुशल प्रशासक.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

(7) शिक्षा में सुधार—इस समय देश पश्चिमी सभ्यता की तरफ बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। देश में इंगलिश मीडियम के स्कूल बड़ी तेजी से बढ़ रहे हैं। गरीब घरों के बच्चे भी अंग्रेजी मीडियम स्कूलों में पढ़ रहे हैं, चाहे घरवाले ऋण लेकर बच्चों को पढ़ाते हों। आज का युवक दिशाहीन बन चुका है और पश्चिमी देशों की तरफ भाग रहा है। यह देश का दुर्भाग्य है। मोदी जी की सरकार को हिन्दी मीडियम के स्कूलों को आकर्षक बनाना होगा। टी.वी. और फिल्मों के माध्यम से इसके महत्त्व को बताना होगा और गुरुकुलों की प्राचीन पद्धति को देश में पुन: लाना होगा।

(8) देश में एकता बनाये रखना—देश में एकता का होना बहुत जरूरी है। जो नागरिक देश का हितैषी है, वही सच्चा नागरिक है और उसी को देश में रहने का अधिकार है और जो देश का द्रोही है, देश को हानि पहुंचाना चाहता है वह देश का सच्चा नागरिक नहीं है। उसको देश में रहने का कोई अधिकार नहीं है। वह चाहे किसी भी धर्म, सम्प्रदाय व किसी भी प्रान्त का क्यों न हो। इस फार्मूले को सख्ताई से अपनाया जायेगा तभी सभी नागरिक देशहितैषी होंगे और सबमें एकता और प्रेम बना रहेगा। यदि तुष्टिकरण की नीति रहेगी तो देश में एकता कभी नहीं आ सकेगी। कांग्रेस की इसी गलती से देश संगठित नहीं हो सका और पतन की ओर चला गया।

(9) धर्म परिवर्तन पर रोक—अभी तक देश में ईसाई और मुसलमान, लोभ, लालच व भय से गरीब से गरीब आदिवासी हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करके ईसाई व मुसलमान बना रहे थे जिससे हिन्दू दिन-प्रतिदिन घटते जा रहे थे। इस पर रोक लगाना बहुत जरूरी है। कोई व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से किसी धर्म को अच्छा समझकर उसे ग्रहण करता है, इसमें कोई दोष नहीं। परन्तु लोभ, लालच व भय दिखलाकर किसी का भी धर्म परिवर्तन करना भारी जुल्म समझा जाये और उसे दण्डित किया जाये। ऐसा कानून अब जरूर-जरूर बनना चाहिए।

(10) स्वदेशी सामान को बढ़ावा देना—देश की उन्नति व समृद्धि के लिए प्रत्येक भारतीय को देश में बने सामान का ही प्रयोग करना चाहिए और विदेशी सामान का प्रयोग तभी करना चाहिए जब वह चीज देश में न बनती हो। यह भावना देश की उन्नति व समृद्धि के लिए बहुत जरूरी है।

(11) गोरक्षा का होना जरूरी—जब से देश के किसानों को कैमिकल से बनी यूरिया खाद देना आरम्भ किया तभी से अनाज विषैला और भूमि बंजर होती जा रही है और देश का स्वास्थ्य खराब होता जा रहा है। इसका इलाज गऊ के गोबर व मूत्र से बनी जैविक खाद का प्रयोग ही है। पंचगव्यों का प्रयोग और उन्हीं से बनी दवाइयों का प्रयोग देश के स्वास्थ्य और उन्नति के लिए अति आवश्यक है। इसके लिए गोरक्षा का होना जरूरी है।

वैसे तो और भी कई बातें हैं, पर इन ग्यारह बिन्दुओं का होना बहुत जरूरी है। इसलिए इन पर चलना प्रत्येक भारतीय का नैतिक कर्त्तव्य है। साथ ही सरकार को पूर्ण सहयोग देना भी जरूरी है जिससे देश बहुत शीघ्र ही उन्नत होकर विश्व में अपना एक स्थान बना सके।

संपर्क-गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7 फोन 033-22183825, 64505013, ऑफिस-26758903

hearyasamaj.org

पौराणिक मित्रों से निवेदन

भेंटकर्त्ता :-
सूबेदार करतारसिंह
आर्य सेवक
आर्यसमाज गोहाना
मण्डी (सोनीपत)

तुम महापुरुषों के गौरव को मिटाना छोड़ दो।
झूठे आरोपों को इन पर लगाना छोड़ दो॥
श्रीराम, श्रीकृष्ण जी, तो ईश्वर के भक्त थे।
ईश्वर अवतार अब इनको बताना छोड़ दो॥
शिक्षा इनकी ग्रहण करो, इनके गुण धारण करो।
स्वांग भर महापुरुषों के, अब तो नचाना छोड़ दो॥
रासलीला में न इनसे, भीख मंगवाओ कभी।
ऐसा अब अपमान तो, करना-कराना छोड़ दो॥
धर्मपत्नी कृष्ण जी की, थी केवल एक रुक्मिणी।
काहन राधा गोपियों का,अब बताना छोड़ दो॥

है यदि कुछ भी तुम्हें, इन्सानियत का पास गर।
पत्थरों की मूर्तियों पर, सिर झुकाना छोड़ दो॥

मन के मन्दिर में प्रभु की ज्योति के दर्शन करो।
असली मन्दिर है यही, नकली ठिकाना छोड़ दो॥

काली भैरो पर करो ना, जीव हत्या को कभी।
बकरे भैंसें देवियों पर, अब चढ़ाना छोड़ दो॥

जीवित माता-पिता की सेवा करो खिदमत करो।
मुर्दे कुछ खाते नहीं, भोजन पहुंचाना छोड़ दो॥

वक्त है अभी संभल जाओ तुम प्यारे भाइयो।
वेदमार्ग पर चलो मजहबी फँसाना छोड़ दो॥

धर्मशास्त्रों को पढ़ो, सत्य ज्ञान को हासिल करो।
पुराणों की अश्लील गाथायें सुनाना छोड़ दो॥

बुद्धि दी परमात्मा ने, **'सेवक'** इससे काम लो।
सीधे मार्ग पर चलो, अब उल्टा जाना छोड़ दो॥
सत्य धर्म धारण करो, झूठा तराना छोड़ दो॥

धर्म- धर्म ऐसा कर्म है, जो सुख करे प्रदान है।
लोक और परलोक में, सुख का करे सामान है॥
धर्म ही है सच्चा रक्षक, रंज में और शोक में।
धर्म है सच्चा सहायक, लोक में परलोक में॥

हिन्दी विरोध की राजनीति राष्ट्रहित में.... पृष्ठ 2 का शेष....

किरेन रिजजु ने हिन्दी में शपथ ली तथा वे प्राय: हिन्दी में ही बोलते हैं। जम्मू कश्मीर के सब लोग हिन्दी बोलते हैं। भले ही वे उसे उर्दू का नाम दिए हुए हैं। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला प्राय: हिन्दी बोलते हैं लेकिन घटिया राजनीति के कारण उन्होंने हिन्दी का विरोध पिछले दिनों में किया। अब्दुल्ला परिवार ने हमेशा देश विरोधी कार्य किए हैं। जिस अदूरदर्शी व कुत्सित सोच के कारण महाराजा हरिसिंह की जगह शेख अब्दुल्ला को कश्मीर का शासन सौंपा गया वह इतिहास के पन्नों में छिपा हुआ है जिसकी चर्चा यहां करना उचित नहीं है। देश की जनता सब कुछ जानती है लेकिन शासन से स्वार्थ साधने में उसे विवश, गूंगा और अनजान बनने को विवश होना पड़ता है। हमें यह कहने में असत्य नहीं लगता कि अंग्रेजों द्वारा स्थापित कांग्रेस ने कुछ प्रसंगों को छोड़कर भारत और भारतीयता के विरोधियों को ही प्रश्रय दिया है। इसलिए देश की छोटी छोटी समस्याएं बड़ी बनती गई तथा नई नई समस्याएं पैदा भी होती गई। अब कांग्रेसी सोच से दूसरी सोच वाली पार्टी का बहुमत केन्द्र में आया है। देश प्रतीक्षा में है कि शायद देश की सभी समस्याएं सुलझेंगी।

अन्य देशों के उदाहरण

रूस, चीन जैसे बड़े देश तथा जापान, इजरायल, जर्मन, इंग्लैंड, फ्रांस जैसे छोटे देशों ने पूरे देश के लिए एक भाषा मान्य की तथा उससे विकास का उदाहरण सबके सामने है। अनेक देशों ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को भी अपने देश की भाषा में काम करने को विवश किया है। विदेशी भाषा में सब लोग प्रवीण नहीं हो सकते। जो लोग विदेशी भाषा में प्रवीण होते हैं वे बखूबी पूरे देश का संसार से ज्ञान विज्ञान का व अन्य संपर्क साध सकते हैं। ये लोग एक प्रतिशत के आसपास ही बहुत होते हैं। सब पर विदेशी भाषा थोपने से पूरा देश पिछड़ता है। समय पैसा का अपव्यय होता है ट्यूशन कोचिंग संस्कृति पनपती है। शिक्षा दुरूह बन जाती है। देश की स्वाभाविक सरल संस्कृति कुन्द हो जाती है। जितना उत्तर भारतीय अंग्रेजी में पिछड़ता है उतना ही कमोबेश दक्षिण भारतीय पिछड़ता है लेकिन तमिलनाडू के नेता अंग्रेजी का विरोध कभी नहीं करते। अंग्रेजी अनिवार्यता ही है जो हमारी भाषाओं को आपस में लड़ा रही है तथा स्वयं सिंहासन पर विराजमान है यह हमें क्यों नहीं दिखाई पड़ता? अंग्रेजी जानना विदेश संपर्क में सहायक है विदेश से पहले देश जरूरी यह समझना प्रत्येक नागरिक के लिए जरूरी है। यदि हम अंग्रेजी को देश की संपर्क भाषा रखेंगे तो विश्व की अनूठी भारतीय भाषायों को स्वयं ही नष्ट कर देंगे। यह अपने पैरों में स्वयं कुल्हाड़ा मारना होगा।

हिन्दी प्रान्त ही हिन्दी दुर्दशा के लिए उत्तरदायी

यदि हिन्दी प्रान्त अपने अपने प्रदेश में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में करते तो आज हिन्दी विश्व भाषा बन गई होती। हिन्दी में प्रत्यके विषय की पुस्तकों का लेखन हो चुका है लेकिन पुस्तकें पुस्तकालयों में दीमक की भेंट चढ़ रही हैं और संस्थाओं और कार्यालयों में कार्य अंग्रेजी में घसीटे जा रहे हैं। हिन्दी प्रान्तों में वहीं पर प्राय: हिन्दी का प्रयोग होता है जहां पर अंग्रेजी चल नहीं पाती। हरियाणा प्रान्त जो हिन्दी प्रान्तों के लगभग मध्य में है यहां सभी स्कूलों में शिशुशाला से स्नातक स्तर तक अंग्रेजी थोपी गई है। जहां कभी सरस्वती नदी के किनारे ऋषियों ने वैदिक ऋचाओं का गान किया था। जहां महाभारत नाम के विश्व युद्ध में भी श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश संस्कृत भाषा में दिया था। जहां ऋषिगण सोमलता रस पान करके मन, बुद्धि व शरीर को स्वस्थ रखते थे वहां पर घर घर में सुरापान करके चौबीसों घंटे मानवता का अट्टहास हो रहा है। हिन्दी जन-जन की भाषा होने के कारण स्वत: ही बढ रही है। हिन्दी प्रान्तों का क्षेत्र विस्तृत है अत: अन्य प्रान्तों को अनेक मामलों में हिन्दी प्रान्तों से वास्ता पड़ता रहता है जिससे सभी प्रान्तों में हिन्दी समझी जाती है। हिन्दी प्रान्तों के साथ लगते प्रान्त तो हिन्दी बखूबी समझते हैं तथा हिन्दी प्रान्त भी उनकी भाषा समझते हैं। पूरा देश ही नहीं पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तिब्बत, नेपाल, बंगला देश, म्यांमार, थाईलैंड, वियतनाम, इंडोनेशिया, कम्बोडिया आदि देशों में भी हिन्दी बोली व समझी जाती है। फिजी, गियाना, त्रिनिडाड, मालद्वीप, मौरीशस आदि देशों में हिन्दी मान्य भाषा है और वहां की बोली है, यह तब है जब हिन्दी के लिये कोई सरकार कुछ नहीं कर रही है। कम से कम हिन्दी प्रान्त तो केन्द्र को मजबूर कर सकते हैं कि-हमारे छात्रों को उच्च से उच्च स्तर पर हिन्दी माध्यम का विकल्प चाहिए। हमें उच्च न्यायालयों व सर्वोच्च न्यायालय में हिन्दी का विकल्प चाहिए। इसके लिए आंदोलन चलते रहते हैं लेकिन हिन्दी प्रान्त ही हिन्दी विकास की मांगों की अनदेखी कर रहे हैं। यह विश्व का एक आश्चर्य है??? धिक्कार है हिन्दी प्रान्तों को जो लार्ड मैकाले के सपने पूरे करने के लिए राष्ट्रभाषा का गला दबाए हुए हैं!!! शहीदों के बलिदान भुला दिए गए हैं।

समाधान क्या है?

केन्द्र सरकार को तुरन्त यह विधेयक संसद में पारित करना चाहिए कि केन्द्र से संपर्क करने के लिए तीन विकल्प होंगे। 1. हिन्दी 2. संस्कृत 3. प्रान्तीय भाषा। तथा देश का कार्य इंग्लिश में बिल्कुल नहीं चलेगा और न ही देश में कहीं पर भी अंग्रेजी पढ़ाना अनिवार्य होगा। तब अंग्रेजी को छात्र आवश्यकतानुसार पढ़ेंगे न कि अनिवार्य रूप में। कार्यालयों में अनुवादक रखने होंगे। शुरू शुरू में लोग अपनी मातृभाषाओं का प्रयोग करेंगे लेकिन हिन्दी प्रान्त अधिक होने के कारण धीरे-धीरे सभी हिन्दी का प्रयोग करने लग जायेंगे। हां हमें प्रत्येक मातृभाषा के साथ संस्कृत जोड़कर पढानी होगी। उससे एक भाषा शीघ्र पनप जाएगी क्या सरकारें इस पर ध्यान देंगी? पिछली सरकार चाहती तो हिन्दी संस्कृत सहित भारतीय भाषायें बहुत आगे बढ गई होती। देखते हैं राजग व भाजपा की राष्ट्रवादी सरकार राष्ट्रभाषा को स्थापित करेगी या दिखावा मात्र ही करती रहेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।